।। अथ बचन को अंग ।।मारवाडी + हिन्दी*

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधािकसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे, समजसे, अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नहीं करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नहीं हुओ, उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढ़नेके लिए लोड कर दी।

ा अथ बचन को अंग लिखंते ।। ा कवत ।। वचना नाहीं मोल ।। तोल सो माप न आवे ।। जो जाणे कोई बोल ।। ब्रम्ह के मांय मिलावे ।। बायक बिष फतार ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बचना सूं अवतार ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बचना सूं अवतार ।। बप्प घर मेळा लिजे ।। बचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनों से बोलकर याने झाड़ देकर विष उतार देते हैं,कोई भी सौदा वचनों से होता हैं,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनों में बंधकर ही अवतार पम अाते है व राक्षसों को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।।। बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना होरे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। वायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनों से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनों से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले से ।।।।।। हिये तराजु तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम राम राम राम राम राम
बचना नाही मोल ।। तोल सो माप न आवे ।। पाम पाम पाम बचना नाही मोल ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बायक बिष फतार ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बचना सूं अवतार ।। बप्प घर भेळा लिजे ।। बचना सूं अवतार ।। बप्प धर राक्स मान्या ।। जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत ऊधान्या ।। १ ।। वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनों से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है,कोई भी सौदा वचनों से होता है,वचनोंसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनों में बंधकर ही अवतार पाम सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।।।। बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी में आवे ।। बचना के बस जरख ।। नट्य बाजीग्र खेले ।। वचना के वचना से आण जमी पर मेले ।। नाटक चेटक सीख ।। नट्य बाजीग्र खेले ।। संह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनों से मुठ चळाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनों से मुठ चळाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनों से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीख़कर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । पाम मन के विचार भी वचनों से प्रगट होते है । वचनों से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे पाम हैं ।।।।।	राम राम राम राम
जो जाणे कोई बोल ।। ब्रम्ह के मांय मिलावे ।। बायक बिष फतार ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बचना सूं अवतार ।। बफ धर राकस मान्या ।। राम जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत फधान्या ।। १ ।। राम जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत फधान्या ।। १ ।। राम जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत फधान्या ।। १ ।। राम जमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है,कोई भी सौदा वचनो से होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार उप आते है व राक्षसो को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।।।। राम बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना को बस जरख ।। आण जमी पर मेले ।। बचना को वस जरख ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । पम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही धुव आकाश में अटल बैटे का है । ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम राम राम राम
बायक बिष ऊतार ।। बचन सें सोदा कीजे ।। बेटा बेटी ब्याव ।। परण घर भेळा लिजे ।। बचना सूं अवतार ।। बफ धर राकस मान्या ।। जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत ऊधान्या ।। १ ।। वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते हैं,कोई भी सौदा वचनो से होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार उस होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार अते है व राक्षसों को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी में आवे ।। बचना के बस जरख ॥ दोड़ म्हेरी में आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। चान बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। सायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ॥ २ ॥ सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही धुव आकाश में अटल बैटे तराज तोला ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम राम राम
बेटा बेटी ब्याव ।। परण घर भेळा लिजे ।। बचना सूं अवतार ।। बफ धर राकस मान्या ।। जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत ऊधान्या ।। १ ।। वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है,कोई भी सौदा वचनो से होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसो को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना कं बस जरख ।। दोड़ म्हेरी में आवे ।। बचना कं बस जरख ।। नट्य बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चळाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही धुव आकाश में अटल बैठे तराज तोला ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम राम
बचना सूं अवतार ।। बफ धर राकस माऱ्या ।। जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत ऊधाऱ्या ।। १ ।। चचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है, कोई भी सौदा वचनो से होता है, वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसों को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच, वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना बंधे नहार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना कं बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चळाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
पाम जन सुखिया मन सोच रे ।। बचन संत ऊधाऱ्या ।। १ ।। पाम वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है, कोई भी सौदा वचनो से होता है, वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसों को मारते हैं । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं की हे मन तुं राम सोच, वचन से ही संत जीव का उद्धार करते हैं । ।।१।। पाम बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना कं बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। चाम वचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। साम वाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। साम वायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । पाम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही धुव आकाश में अटल बैटे राम है । ।।।।	
वचन अनमोल है उसका कोई तोल मोल नहीं है । यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पुर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती हो जाती है । वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है, कोई भी सौदा वचनो से होता है, वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार अाते है व राक्षसों को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच, वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। वचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। गाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चळाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । गम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे स्था है । ।।।।।	राम
जाती है। वचनो से बोलकर याने झाड़ा देकर विष उतार देते है,कोई भी सौदा वचनो से होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है। वचनो में बंधकर ही अवतार अप होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है। वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसों को मारते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है। ।।१।। वचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे।। बचना कं बस जरखा। दोड़ म्हेरी में आवे।। बचना तारा तोड़ा। आण जमी पर मेले।। नाटक चेटक सीखा। नटग्र बाजीग्र खेले।। वायक सूं सुखराम के।। अटळ धु बेठा जाई।। २।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है। वचनो से मुठ चळाते है। वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है। वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है। नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है। वचन से हार जीत होती है। पम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है। वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे सम है।।।।।। हिये तराज तोला। मोल कर बायर लावे।।	
होता है,वचनोसे लड़का लड़की की ब्याव शादी होती है । वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसो को मारते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। गाम बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । गम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राम है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
शाती है, वचनीस लड़की लड़की की ब्याव शदा होती है। वचनी में बंधकर हो अवतीर आते है व राक्षसों को मारते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे मन तुं सोच, वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है। ।।१।। पम बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है। वचनों से मुठ चलाते है। वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है। वचनों से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है। नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है। वचन से हार जीत होती है। पम के विचार भी वचनों से प्रगट होते है। वचनों से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राग तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
सोच,वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है । ।।१।। राम बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। राम नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। राम बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ ध्रु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । राम पम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राम है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	
बचना बंधे न्हार ।। बीर सो मूठ चळावे ।। बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। पाम नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । पाम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैठे पास है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
बचना के बस जरख ।। दोड़ म्हेरी पें आवे ।। बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। गाम नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ ध्रु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । गम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
बचना तारा तोड़ ।। आण जमी पर मेले ।। गम नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ ध्रु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । गम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे सम है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
नाटक चेटक सीख ।। नटग्र बाजीग्र खेले ।। बचना हारे जीत ।। बचन सूं मन उपाई ।। बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धु बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । पम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे सम है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
राम	राम
बायक सूं सुखराम के ।। अटळ धुं बेठा जाई ।। २ ।। सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है । वचनो से मुठ चलाते है । वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है । वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है । नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है । वचन से हार जीत होती है । राम मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है । वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैठे सम्म है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है। वचनो से मुठ चलाते है। वचन के वश होकर जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है। वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है। नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है। वचन से हार जीत होती है। मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है। वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राम है। ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे।।	
जरख दौड़कर स्त्री के पास आ जाता है। वचनो से आसमान के तारे तोड़कर जमीन ले आते है। नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है। वचन से हार जीत होती है। पम के विचार भी वचनो से प्रगट होते है। वचनो से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राम है। ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
राम मन के विचार भी वचनों से प्रगट होते हैं । वचनों से बंधकर ही ध्रुव आकाश में अटल बैटे राम है । ।।२।।	राम
राम है । ।।२।। हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
हिये तराज तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
हिये तराजु तोल ।। मोल कर बायर लावे ।।	राम
VIE	राम
गोतों कदे न खाय ।। बेण पाछो नहीं आवे ।।	राम
प्रदेश प्रमाम ।। यहां तहा सब हा मान ।।	
भरी सभा के बिच ।। ताय की बात बखाणे ।।	राम
गम मोलस तोलस नांय ।। बचन की कहाँ बडाई ।।	राम
जन सुखिया मन सोच ।। बचन कहीये मुख लाई ।। ३ ।। अपने वचनोको हृदय के तराजु मे तोलकर फिर बोलना चाहिये । जो वचनोको तोलकर	राम
राम	राम
्र अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	
राम	बोलता है वो कभी गोता नहीं खाते हैं क्यों की बोले हुये वचन वापीस नहीं आते हैं ।	राम
राम	अच्छे वचन वालो की परदेश के भुमी पर भी सब जगह बात मानते है और भरी सभा मे भी ऐसे व्यक्ति के वचनो की बात द्रष्टांत के रुप मे बखाण करते है और जो वचनोको	राम
राम		राम
राम		
	चाहिये । ।।३।।	राम
	मंत्र के बस देव ।। सेव सूं आन मिले हे ।।	
राम	डाकण सरस सलेस ।। बिष बासक को जैहे ।।	राम
राम	न्हारी दे नित दुध ।। आय खुंटे से बंधे ।।	राम
राम	मंत्र के बस भूत ।। आण धोरा नित संधे ।।	राम
राम	पवन पाणी धरत्री ।। सब मंत्र बस होय ।।	राम
राम	तो हर मंतर सुखराम के ।। क्यूँ राम मिले नी तोय ।। ४ ।।	राम
	मंत्रों के वश में देवता है वे सेवा करनेसे आकर मिलते । मंत्रों से ही डाकण,सरस,सलेस व	
राम		
	है। भुत भी मंत्र के वश में होकर काम करने लग जाते है। परन पानी, धरती सब मंत्रों के	
	वश में है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की परमात्मा नाम ही मंत्र है तो उसका जप करने से रामजी क्यो नहीं मिलेगे । ।।४।।	राम
राम	सो मण अन की प्रख ।। बानगी मांहि दिखावे ।।	राम
राम		राम
राम	सस्तर कीसूं सुण मूठ ।। बाण ओकी जो छूटा ।।	राम
राम	सिध मंतर सुण जाप ।। जाब नेकी रिध खूटां ।।	राम
	युँ हरजन की पारखा ।। सबद एक के माँय ।।	
राम	अगम बात सुखराम के ।। आण पटके लाय ।। ५ ।।	राम
राम	सैकडो मण अन्न की परीक्षा नमुने से होती है । मनुष्य मे कितनी अकल व बुद्धि है	राम
राम	उसकी परीक्षा वचन बोलने मे हो जाती है । तलवार की परीक्षा मुठ से होती है । बांण की	
राम	परीक्षा एक ही बार छोड़ने से होती है । सिध की भी मंत्र की साधना से ही सिद्धि होती है	राम
राम	। ऐसे ही संतो की परीक्षा वचन से हो जाती है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते	राम
राम	है की जो तीन लोको से परे अगम देश के पद की बात बताते है वे सतस्वरुपी संत है ।	राम
	االااا	
राम	।। इति बचन को अंग संपूरण ।।	राम
राम		राम
राम	_	राम
	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	

अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट्र